सगुनक भार

मैथिली कथा संग्रह

Vijoy Shankar Mallik

विजय शंकर मल्लिक 'सुधापति'

सगुनक भार (मैथिली कथा संग्रह)

लेखक- विजय शंकर मल्लिक 'सुधापति'

संपादक- भैरव लाल दास

प्रकाशक- विविधा, बी-402, श्रीराम कुँज अपार्टमेंट, रोड नं.- 4, महेशनगर, पोस्ट- केसरीनगर, पटना- 800024

प्रकाशन वर्ष- 2016

© विजय शंकर मल्लिक 'सुधापति'

ISBN 9788192121093

मूल्य- 300/- (तीन सय टाका मात्र)

वितरक- ALL I NEED, INDIA
17, 6th main, 2nd Cross, Vinayaka Layout,
Marthahalli, Bangluru, Karnataka- 560037
Ph.: 09740142299, 988673005
Wbsite: www.allineed.in

आवरण : अलका दास, पटना

Sagunaka Bhar, (Maithili Katha-Sangraha) by Vijay Shankar Mallik 'Sudhapati', published by Vividha, Patna, 2016

Printed by: Shri Krishna Industries, www.shrikrishnaind.co.in,
Mail: shrikis@rediffmail.com, Mob: 09422669133

फुसियेक बखेरा

धीरक सभसँ छोट बहीनक विवाह छलै। दिनक मंजूरी लिखाकऽ हजाम आबि गेल रहैक। मात्र चारि दिन बाँचल रहैक। घरक सभ लोक ओरियान-बात मे लागल रहय। विदागरी वाली सभ पूर्वे आबि गेलीह। ओकर जेठकी बहीन सभसँ पहिले एलीह। ओ सभ किछु बुझैत छथिन्ह। हुनका एलाक बादे कोनो आयोजनक शुरूआत होइत रहैक धीरक घऽर मे। तकर कारण रहैक जे ओ शुरूए सँ एहि घरक नून-पानिक खियाल राखि निर्विघ्न कार्य सम्पादनक क्षमता रखैत छलीह आ निःस्वार्थ भावे भाई-बहिन के समेटि, उचित-अनुचितकं ध्यान राखि, समय पर सभ वस्तु-जातक व्यवस्था हेतु चरिया-चरिया सही रूपे आयोजनक विधि-विधान पूर करबाक क्षमता रखैत छलीह। घऽरक आओर लोकके एहि तरहक ऊहि नहि छलैक। हिनका आबि गेलाक बाद धीर आ कि ओकर माय कार्यक सफलता हेतु आश्वस्त भऽ जाइत छलि। ओ नेनहि सँ बुद्धिमती रहथि। एहि घरक गरीबी मे पूर्णरूपेण भीजि सुचारू रूपे कार्य संचालन करबाक मादा रखैत छलि। दरबज्जा पर भरि गामक लोक बइसल छल। विवाहक फिहरीस्त तैयार भऽ रहल छलैक। गामक मानी-परधानी लोक एकट्ठा भऽ, घरबारीक परिस्थिति देखि कार्यक्रम पर विचार करैत छल जाहि सँ सही रूप मे कार्यक्रमक सम्पादन हो तथा गामक ईज्जति-आबरू बँचल रहय। जाहि घर मे कमी रहैत छलै ततय धने-जने मदति करबाक लेल सभ कियो उद्यत रहथि से अपेक्षा कयल जाइत रहैक। विवाह एक यज्ञ थीक जाहि मे सर-समाजक सभसँ मदति लेब आवश्यकप्राय रहैक। संगहि भोज-भातक आयोजन मे सेहो कोनो त्रुटि नहि हो सेहो ख्याल मे राखि विचार-विमर्श होइत छलैक।

Vijoy Shankar Mallik

बइसार मे धीरक पिता नहि छलाह। कारण ओ वेशी बीमार रहला संता बाहर-भीतर कम होइत छलाह। सभ दारमदार धीर आ कि ओकर जेठकी बहिन पर छलैक। जेहने नाम तेहने गंभीर सेहो छल धीर। ओकर काज करबाक अलग तरीका छलैक आ सभके मिलाजुला कार्य सम्पन्न कराबक लूरि सेहो छलैक। धीरक ज्येष्ठ के कोनो फिकिर नहि रहैत छलैन्ह। ओ लंग लाड़ला सदा सुखी किस्म के व्यक्ति छलाह। "मारी माँछ ने उपछी खत्ता" हिनक मूल मंत्र रहनि।

बइसारक एंको घंटा नहि भेल छलैक। सबसँ पहिने विवाह आ कि कुमरम दिन

जे भोजभात हेतैक आ कि वरियाती आबि ठहरतैक से कतऽ? कोना? ताहि बात पर बहस चलि रहल छलैक आ कागज पर मुख्य मुद्दाक हल लिखा रहल छलैक। मुखियाजीक ओहिठाम सँऽ सामियाना लाइट भेटतै, दुसधटोली सँ कराह आ डेगची, सभक दरबज्जा पर सँ कुर्सी बेन्च अओतैक। दू गोट दरी मसलंग आ जाजीम यादवजी ओहिठाम छैक आदि आदि लिखा रहल छल। धीर अपने कागज पर लीखैत जा रहल छल। एही बीच जेठकी बहीन आबि कहलकैक "रे धीर! कनी उठ एतय सँऽ, अंगना चल।"

धीर पुछलकै- "की बात छै।"

"आ... ने, कहै छियौ।"

हरबरायल धीर विदा भऽ गेल। कागज कलम ओतहि छोड़ि देलक आ माइंजन के आगाँ विचार-विमर्श करबा हेतु कहि कहलकै जे "हम चट्टे अबैत छी।"

बाट मे जेठकी बहीन कहलकै जे "पूरा अंगनाक लोक बारी मे महाभारत मचौअने छौक। जाकऽ शान्त कर नहि तऽ एहि गर्दमगोल मे शुभ काज कोना भऽ सकतै? एम्हर बेटीक पसाहिन करक छैक। के की करतैक? मायो ओतहि छौ। सभ झमझौहरि मे लागल छौक। जाकऽ देखहिन। हमर किछु बाजव उचित नहि हेतैक। हम बियाहलि बेटी छीयै ने?" हमर के सुनतै। धीर कहलकै "ठीक छौ, तों घर जो। हम देखै छीयैक।"

Vijoy Shankar Mallik

धीर बाड़ी गेल तऽ देखलक जे ओकर माय एवं सभ दियादनीक बीच वाक्युद्ध चलि रहल छैक। आरोप प्रत्यारोपक दौड़ तेज छैक। संग मे कौशल सेहो धनिकलाल के गरिया रहल छैक। ई दृश्य देखि दू मिनट धरि बात के बुझवाक प्रयास कयलक मुदा किछु बूझि नहि सकल तऽ पहिले हल्ला शान्त करबाक सोचलक। तुरंत बाजि उठल- "की बात छैक? अहाँ सब कोन बात के लऽ कऽ परेशान छी? एखन समय कोन अछि आ अहाँ सभ कथी मे बाझि गेल छी? शुभ कार्यक समय कहीं ई सभ भेलैक अछि? अहाँ सभ सभ किछु बिसरि गेलहुँ? आश्चर्यक बात थीक। शान्त होउ आ घर जाइ जाऊ।

फेर धनीकलाल पासी सँ पुछलक। ओहो ओतय छल।

"की रौ की बात छैक? कथीक झगड़ा थीकैक?

धनिकलाल बाजल "तारक छज्जा बाँटक लेल झगड़ा होइ हई"

धीर- "तारक छज्जा? एहि मे झगड़ाक कोन बात भेलैक?"

धनिकलाल- "मालिक ई जे आरि पर तीनू तारक गाछ हइने तकर जे छज्जा हई, से हम काटि कऽ जमा कऽ देलियै। दादी सँ पूछिकऽ। पहिलो कते बेर दादी के कहलियनि जे गाछ साफ कऽ दै छी लेकिन ओ मना कऽ देलखिन्ह। कहने रहथिन जे जखन कोनो काज करतविता हेतैक तखन कटिहैं, जे जारनि मे काज देतैक। एखन कटमे तऽ राखल राखल सड़ि जेतैकं। हमहु छोड़ि देने रहियैक। एखन दाइ के बियाह हइ ने तऽ पूरा गाछ के सफाई कऽ देलियै। पूरा छज्जा मते दू भाग मे बाँटि देलियै। एक हिस्सा

हमर होतै आ आधा मालिक के। मालिक वला हिस्सा बाँटैत रहियै तऽ सभ आबि के झगड़ै लगलै। हम की करियै।"

आब धीर के सभ बातक जन्तव भऽ गेलैक। झगड़ा के जड़ि छज्जे नहि बल्कि घाव कत्तहु आ पौ कत्तहु रहैक। एहि बाड़ी के चारू कात जावन्तो गाछ लागल छैक जे धीरक पिता पच्चीसो साल पहिने लगौने रहथि। ई बाड़ी कहिया ने टुकड़ा टुकड़ा बँटा गेलैक लेकिन चारू कातक धूर बला गाछ पर कोनो निर्णय नहि लेल गेलैक। बहुतो गाछ तऽ अपने सुखा गेल रहैक। जे किछु बाँकी रहैक तऽ अंगनाक जे सबसँ जेठ भाई रहथिन कहलखिन्ह "लगायल गाछ अपने नहि काटी एकरा छोड़ि दियौक। अहाँ लगौने छी तऽ आधा अहाँ लेब आ आधा मे सँ सभ फरिकान मे बखरा लागि जेतैक" ओहि समय मे गामक चारि लोक उपस्थित रहथि। सभ एहि बात के समर्थन कय लैथ आ धीरक पिता गाछ कटबाक विचार छोड़ि देला।

ओतऽ मरिये गेला। आनो ओनो जे गामक लोक छलाह सेहो सब दिवंगत भऽ गेलाह। एखन झगड़ाक विषय वस्तु यैह रहैक जे धीरक माय आधाक मालिक नहि बल्कि फाँटक हिसाबे जे होइक सैह लैथ। लेकिन धीरक भाय एहि लेल तैयार नहि तैंऽ बकतूत होइत रहैक। सभ बातक अटकर लगा धीर बाजल "एखन अहाँ सभ जाइ जाउ।

Vijoy Shankar Mallik

हिस्सा-बखराक निर्णय जे देने रहथि, से आब कियो एहि दुनिआ मे नहि छथि। तखन एकर फैसला के करत? ई तऽ तखने सम्भव छैक जखन पुनः गामक लोक एक संग बईस कऽ फैसला दय सकैत अछि। मुदा से एखन कोना होयत? विवाह-दान सम्पन्न होमय दीऔक तखन ई काज कयल जायत आ छज्जाक बँटवारा भऽ जायत। तात्काल छजजा एतहि रहतैक। धनिकलाल अपन हिस्सा लऽ जायत। मालिकक हिस्सा यथावत् रहत।

धीरक बात तर्कसंगत रहैक। से गौर कऽ सभ क्यो अंगना चलि गेली। किन्तु कौशल रूकल रहि गेल। हम धनिकलाल के आदेश देलियैक "तों अपन आधा हिस्सा उठाक लऽ जो। मालिकक हिस्सा एतहि छोड़ि दही" धनिकलाल अपन हिस्सा जखन उठवय लागल तऽ धीरक माय के पुछलक "दादी! ई छज्जा कतऽ राखि दीअ?"

धीरक माय उत्तर देली "उतरबरिया अंगना मे।"

धीर, माय सँ पुछलक "ई की भेलै? ओ अपन हिस्सा तोरा कियैक देतौ माय?

माय - "से नहि बुझलीही? ई पासी नहि सोईत अछि सोइत। ई अपन हिस्सा उघि कऽ अपना ओहिठाम नहि लऽ जायत। हम नहि लेवै तऽ दुसधटोली मे बाँटि देतैक। तैऽ हमरा कते दिन सँ कहैत छल आ हम मना करैत छलियैक काटबा सँऽ। बुझलही।"

धीर - "से बात छैक तऽ ठीक छै।"

मुदा से भेलैक नहि। जखन कौशल देखलकैक जे एते रास छज्जा धीरक घर जेतैक तऽ ओकरा इर्षे दाँती लागऽ लगलै। ओ चट्ट. बाजल "हुनके (धीरक माय के)

कियैक देबहुन्ह। हमरो बाँटि दे।" ई वाक्य धीर के आश्चर्यचकित कय देलकैक। मुदा तुरते ओ अंगनाक सभ लोकक संग कौशल सनक राक्षसी प्रवृत्तिक लोकक इरादा परखि लेलक। ओ बूझि गेल "ईर्ष्या आ लोभ मनुक्खक विवेक के ओहिना हरण कऽ लइत अछि जेना अजगर कोनो जीवकें। एहि सँऽ लोक सद्यह विवश भऽ जाइत अछि आ कोनो उचित अनुचित के ध्यान नहि रहैत छैक। एहि अवस्था मे ओ केहनो अनर्गल कऽ सकैत अछि, बाजि सकैत अछि। से दुर्बुद्धिक मुख्य कारण बनैत छैक।"

कौशलक एहि इच्छा के अपूर्ण रखबाक लेल धीर धनिकलाल पर बिगड़ि कए कहलक "तों अपन हिस्साक छज्जा लऽ जो। दादी के उतरबरिया आंगन मे रखवाक कोनो प्रयोजन नहि। खाहे एकरा कत्तहु बाँटि दे, घर लऽ जो आ कि आगि लगा जरा दे। मुदा एतय सँ तुरत उठाकऽ लय जो। ककरो देबाक जरूरत नहि छैक। ई फुसियेक बखेरा ने छैक। जाहि सँऽ होना ने जाना ताहि लेल ई थुकम फज्जति नीक नहि।"

Vijoy Shankar Mallik

धनिकलाल अछताइत पछताइत धीरे धीरे उठाकऽ छज्जा जहाँ मोन भेलैक, लऽ गेल। जेकरा मोन भेलैक दऽ देलकैक। धीर घुरि दलान परहक बइसार मे शामिल भऽ गेल। लोक पुछवो केलकैक मुदा ओ सभ बात गुप्त रखलक।

बहीनक विवाह दान समपन्न भेलाक 4-5 दिन बाद जखन बाड़ी जेबाक मौका भेटलैक तऽ धीर देखलक एकोटा छज्जा जगह पर नहि रहैक। पता नहि के लऽ गेलैक। सभसँ पुछलकैक किछु ने पता लगलै यानि चोइर भऽ गेलैक। सोचलक ई तऽ यैह ने भेल "ने मइये घर ने सँइये घर"।

एक दू महीना बादे धीरक पिता बेढ़ि परक सभ गाछ जड़ि सँ कटवा देला। छः मास बाद धीर जखन गाम गेल तऽ बेढ़ि सुन्न देखि माय सँऽ पूछि बईसल "सभ गाछ कटा गेलैक?"

माय-हँ! बौआ। के सभ दिन जरन्ता लोक सभ सँऽ झगड़ैत रहत तैं तोहर बाबू के हमही कहलियैन्ह कटवा दैक वास्ते। असोरा परक खम्भा जे देखै छीही से ओही परहक महुआ के छीयैक ने। जखन तोहर बाबू सभ गाछ कटबा देलखुन्ह तऽ साँझ मे कहलखुन्ह "ओना तऽ अपन रोपल गाछ संतानक रूप होइ छैक मुदा जखन लोके निर्विवेकी भऽ जाय तऽ उपाये कोन? आइ सभक काया जुड़ा गेल हेतैक। आब तऽ ने रहल बाँस ने बाजत बाँसुरी।"

फटेदार सबहिक ईर, तुच्छ सोच, आ निर्विवेकी आचार के कारण सब गाछ कटा गेलैक से कतेक नीक आ कि अधलाह, तकर विवेचन करब धीरक मन मे यक्ष प्रश्न बनि गेलैक जकर उदभेदन आइ धरि नहि भऽ सकलैक अछि। आने एहि सँ उबरबाक कोनो बाटे देखि पओलक अछि। ई परम सोचनीय विषय थीक। धीर मायक बात सुनि चुप्पे रहि गेल।

Vijoy Shankar Mallik